उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद
विज्ञान धाम, झाजरा, देहरादून–248007

प्रेस विज्ञप्ति

Date: 11 August, 2018

अंतरिक्ष से प्राप्त सेम्पल में सूक्ष्मजीवों का होना परग्रही जीवन का संकेतः प्रो नार्लीकर

आंचलिक विज्ञान केंद्र (विज्ञान धाम, यूकॉस्ट) में आयोजित व्याख्यान में प्रख्यात खगोलविद पद्म विभूषण प्रो0 जयन्त विष्णु नार्लीकर ने ''पृथ्वी के बाहर जीवन के लिए खोज'' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि मानव की हमेशा से जिज्ञासा रही है कि पृथ्वी के इतर जीवन और कहाँ–कहाँ विद्यमान है। पृथ्वी से सुदूर परग्रही जीवन के संकेतों को खोजना एक पेचीदा कार्य है तथा उसके बारे में कुछ भी निश्चित कहना मुश्किल है। प्राथमिक रूप से परग्रही जीवन के संकेतों के लिए ज्ञात भौतिकी, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान के नियमों के अनुसार अनुमान लगाया जाता है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा खोजे गए पृथ्वी के जैसे अन्य तीन ग्रह जिनकी पृथ्वी दूरी 39 प्रकाश वर्ष है, जिन पर पहुंचना ही असंभव है। इस दूरी को पार करने में अब तक के किसी भी स्पेसक्राफ्ट को कम से कम 30 हजार साल लगेंगे।

लेकिन अंतरिक्ष में पाए जाने वाले उल्का पिंडो के अवशेष तथा वहां के वातावरण में उपस्थित कणों पर सूक्षजीवों की उपस्थिति ने परग्रही जीवन के संकेत अवश्य दिए हैं। भारत में भी इस ओर प्रयास किये गए हैं, जिनमें उनके ही मार्गदर्शन में वैज्ञानिकों की टीम ने पृथ्वी से एकचालीस किलोमीटर ऊपर से इकठ्ठा किये सेम्पल में ऐसे तीन जीवाणुओं की खोज की है जो पृथ्वी पर नहीं पाए जाते। उनके द्वारा प्राप्त आंकड़े तथा परग्रही जीवाणुओं की खोज निश्चित ही परग्रही जीवन के एक बड़े संकेत हैं। अपने उद्बोधन में उन्होंने परग्रही सभ्यताओं की संख्या को लेकर सैद्धांतिक गणनाओं पर फ्रैंक ड्रेक के शोधों पर भी प्रकाश डाला। ड्रैक समीकरण का उपयोग ब्रह्मांड में ऐसी सभ्यताओं की संख्या का आकलन करने के लिए किया गया है जो संवाद करने की क्षमता रखती हैं।

इस अवसर पर प्रो0 नार्लीकर की पत्नी प्रो मंगला नार्लीकर भी थीं जो गणित विषय की प्रख्यात अध्येता हैं। यूकॉस्ट के महानिदेशक डा0 राजेंद्र डोभाल ने शॉल तथा स्मृति चिन्ह देकर दौनों विभूतियों का स्वागत किया। डा डोभाल ने कहा कि प्रो नार्लीकर भौतिक वैज्ञानिक ही नहीं एक विज्ञान संचारक भी हैं, जिन्होंने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए अंग्रेजी, हिन्दी और मराठी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इस अवसर पर प्रो0 एएन पुरोहित, डॉ0 बीआर अरोरा, प्रो0 एम् पी एस बिष्ट, डॉ0 आशुतोष त्रिपाठी, श्री रसायली तथा अन्य

गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। व्याख्यान में जेबी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलोजी, बिहाइब कॉलेज, उत्तराँचल यूनिवर्सिटी, बाबा फरीद इंस्टिट्यूट, डॉलफिन इंस्टिट्यूट, दून बिज़नेस स्कूल के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। समापन पर डा डीपी उनियाल, प्रभारी आंचलिक विज्ञान केंद्र ने आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। व्याख्यान का आयोजन इनोवेशन हब आंचलिक विज्ञान केंद्र द्वारा यूकॉस्ट, नेशनल कौंसिल फॉर साइंस म्यूजियम तथा नेशनल अकादमी ऑफ़ साइंसेज (उत्तराखंड चैप्टर) द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो नार्लीकर ने आंचलिक विज्ञान केंद्र में रुद्राक्ष का एक पौधा भी रोपा।